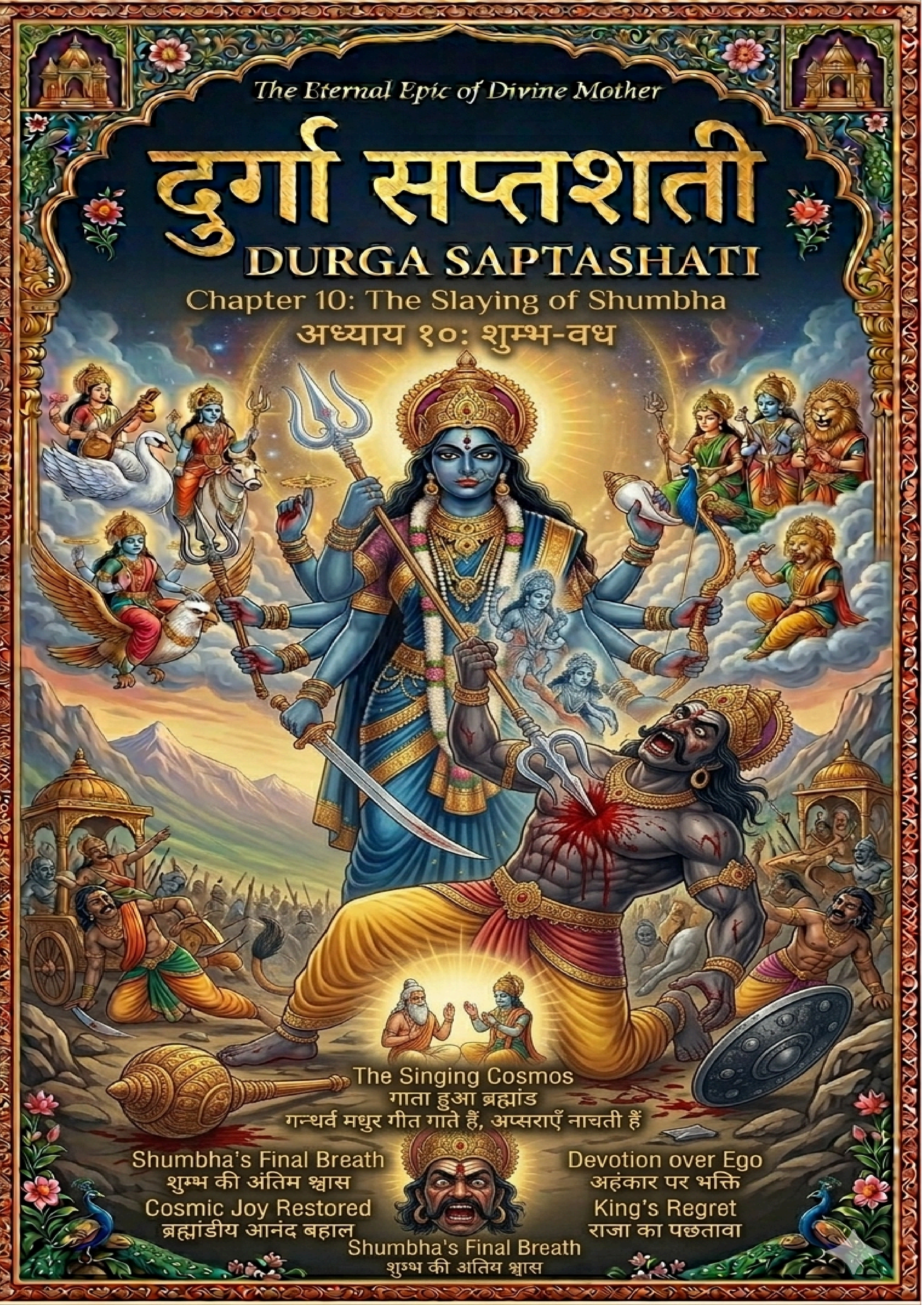
The Eternal Epic of Divine Mother
दुर्गा सप्तशती
DURGA SAPTASHATI
Chapter 10: The Slaying of Shumbha
अध्याय १०: शुम्भ-वध
The Singing Cosmos
गाता हुआ ब्रह्मांड
गन्धर्व मधुर गीत गाते हैं, अप्सराएँ नाचती हैं
Shumbha's Final Breath
शुम्भ की अंतिम श्वास
Devotion over Ego
अहंकार पर भक्ति
Cosmic Joy Restored
ब्रह्मांडीय आनंद बहाल
King's Regret
राजा का पछतावा
Shumbha's Final Breath
शुम्भ की अतिय श्वास

Durga Saptashati
|| 'दशम अध्याय' ||
—

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

दशम अध्याय: शुम्भ-वध का सारांश

देवी माहात्म्य के दशम अध्याय में शुम्भ-निशुम्भ युद्ध के अंतिम चरण और शुम्भ के वध का वर्णन है।

अपने भाई निशुम्भ को मरा हुआ और अपनी सेना का संहार देखकर शुम्भ अत्यंत क्रोधित होता है। वह देवी पर कटाक्ष करते हुए कहता है कि वह अभिमान न करे, क्योंकि वह अन्य स्त्रियों (शक्तियों) के बल पर लड़ रही है।

इसके उत्तर में देवी अम्बिका कहती हैं कि इस संसार में उनके अतिरिक्त और कोई नहीं है। वह अपनी समस्त शक्तियों (ब्रह्माणी आदि देवियों) को अपने ही शरीर में समाहित कर लेती हैं, जिससे वे अकेली रह जाती हैं। देवी कहती हैं कि वे ही अकेली युद्ध में खड़ी हैं, और शुम्भ को स्थिर होने के लिए कहती हैं।

इसके बाद देवी अम्बिका और शुम्भ के बीच भयंकर युद्ध छिड़ जाता है, जिसे सभी देवता और दानव देखते हैं। शुम्भ देवी के अस्त्रों को काटता है, और देवी भी उसकी मायावी शक्ति को हुंकार से नष्ट कर देती हैं। शुम्भ बाणों से देवी को ढक देता है, जिसके प्रत्युत्तर में देवी उसके धनुष को काट देती हैं। शुम्भ शक्ति, ढाल और तलवार लेकर आता है, लेकिन देवी उन सबको भी नष्ट कर देती हैं।

घोड़े और सारथि मारे जाने पर, शुम्भ मुद्गर लेकर आता है, जिसे देवी काट देती हैं। फिर वह मुक्का तानकर देवी की छाती पर प्रहार करता है, और देवी भी उसकी छाती पर चाँटा मारती हैं, जिससे वह पृथ्वी पर गिर जाता है।

फिर वह उठकर देवी को आकाश में ले जाता है, जहाँ उन दोनों का भयंकर युद्ध होता है। अंत में, देवी उसे उठाकर घुमाती हैं और पृथ्वी पर पटक देती हैं।

जब वह दुष्टात्मा दैत्य फिर से उठकर देवी पर वार करने दौड़ता है, तो देवी अम्बिका अपने त्रिशूल से उसकी छाती को छेदकर उसे पृथ्वी पर गिरा देती हैं। शुम्भ के मारे जाने पर, वह समुद्रों, द्वीपों और पर्वतों सहित पूरी पृथ्वी को कंपकंपाता हुआ गिर पड़ता है।

शुम्भ के मारे जाने पर सम्पूर्ण संसार प्रसन्न हो जाता है। उत्पातसूचक मेघ और उल्कापात शांत हो जाते हैं, नदियाँ सही मार्ग से बहने लगती हैं। देवता हर्षित होते हैं, गन्धर्व मधुर गीत गाते हैं, अप्सराएँ नाचती हैं। पवित्र वायु बहती है, सूर्य की प्रभा उत्तम हो जाती है, और सम्पूर्ण दिशाओं के भयंकर शब्द शांत हो जाते हैं।

इस प्रकार, 'शुम्भ-वध' नामक दसवाँ अध्याय पूरा होता है।

Durga Saptashati
|| 'दशम अध्याय' ||

Chapter 10 :

शुम्भ-वध

॥ ध्यान ॥

मैं मस्तक पर अर्धचन्द्र धारण करने वाली शिवशक्तिस्वरूपा भगवती कामेश्वरी का हृदय में चिन्तन करता (करती) हूँ। वे तपाये हुए सुवर्ण के समान सुन्दर हैं। सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि - ये ही तीन उनके नेत्र हैं तथा वे अपने मनोहर हाथों में धनुष-बाण, अङ्कुश, पाश और शूल धारण किये हुए हैं।

ऋषि कहते हैं - राजन्! अपने प्राणों के समान प्यारे भाई निशुम्भ को मारा गया देख तथा सारी सेना का संहार होता जान शुम्भ ने कुपित होकर कहा -

'दुष्ट दुर्गे! तू बल के अभिमान में आकर झूठ-मूठ का घमंड न दिखा। तू बड़ी मानिनी बनी हुई है, किंतु दूसरी स्त्रियों के बल का सहारा लेकर लड़ती है।'

देवी बोलीं - ओ दुष्ट! मैं अकेली ही हूँ। इस संसार में मेरे सिवा दूसरी कौन है? देख, ये मेरी ही विभूतियाँ हैं, अतः मुझ में ही प्रवेश कर रही हैं।

तदनन्तर ब्रह्माणी आदि समस्त देवियाँ अम्बिका देवी के शरीर में लीन हो गयीं। उस समय केवल अम्बिका देवी ही रह गयीं।

देवी बोलीं - मैं अपनी ऐश्वर्य शक्ति से अनेक रूपों में यहाँ उपस्थित हुई थी। उन सब रूपों को मैंने समेट लिया। अब अकेली ही युद्ध में खड़ी हूँ। तुम भी स्थिर हो जाओ।

ऋषि कहते हैं - तदनन्तर देवी और शुम्भ दोनों में सब देवताओं तथा दानवों के देखते-देखते भयंकर युद्ध छिड़ गया।

बाणों की वर्षा तथा तीखे शस्त्रों एवं दारुण अस्त्रों के प्रहार के कारण उन दोनों का युद्ध सब लोगों के लिये बड़ा भयानक प्रतीत हुआ।

उस समय अम्बिका देवी ने जो सैकड़ों दिव्य अस्त्र छोड़े, उन्हें दैत्यराज शुम्भ ने उनके निवारक अस्त्रों द्वारा काट डाला।

इसी प्रकार शुम्भ ने भी जो दिव्य अस्त्र चलाये, उन्हें परमेश्वरी ने भयंकर हुंकार शब्द के उच्चारण आदि द्वारा खिलवाड़ में ही नष्ट कर डाला।

तब उस असुर ने सैकड़ों बाणों से देवी को आच्छादित कर दिया। यह देख क्रोध में भरी हुई उन देवी ने भी बाण मार कर उसका धनुष काट डाला।

धनुष कट जाने पर फिर दैत्यराज ने शक्ति हाथ में ली, किंतु देवी ने चक्र से उसके हाथ की शक्ति को भी काट गिराया।

तत्पश्चात् दैत्यों के स्वामी शुम्भ ने सौ चाँद वाली चमकती हुई ढाल और तलवार हाथ में ले उस समय देवी पर धावा किया।

उसके आते ही चण्डिका ने अपने धनुष से छोड़े हुए तीखे बाणों द्वारा उसकी सूर्य किरणों के समान उज्ज्वल ढाल और तलवार को तुरंत काट दिया।

फिर उस दैत्य के घोड़े और सारथि मारे गये, धनुष तो पहले ही कट चुका था, अब उसने अम्बिका को मारने के लिये उद्यत हो भयंकर मुद्गर हाथ में लिया।

उसे आते देख देवी ने अपने तीक्ष्ण बाणों से उसका मुद्गर भी काट डाला, तिस पर भी वह असुर मुक्का तानकर बड़े वेग से देवी की ओर झपटा।

उस दैत्यराज ने देवी की छाती में मुक्का मारा, तब उन देवी ने भी उसकी छाती में एक चाँटा जड़ दिया।

देवी का थप्पड़ खाकर दैत्यराज शुम्भ पृथ्वी पर गिर पड़ा, किंतु पुनः सहसा पूर्ववत् उठकर खड़ा हो गया।

फिर वह उछला और देवी को ऊपर ले जाकर आकाश में खड़ा हो गया; तब चण्डिका आकाश में भी बिना किसी आधार के ही शुम्भ के साथ युद्ध करने लगीं।

उस समय दैत्य और चण्डिका आकाश में एक-दूसरे से लड़ने लगे। उनका वह युद्ध पहले सिद्ध और मुनियों को विस्मय में डालने वाला हुआ।

फिर अम्बिका ने शुम्भ के साथ बहुत देर तक युद्ध करने के पश्चात् उसे उठाकर घुमाया

और पृथ्वी पर पटक दिया।

पटके जाने पर पृथ्वी पर आने के बाद वह दुष्टात्मा दैत्य पुनः चण्डिका का वध करने के लिये उनकी ओर बड़े वेग से दौड़ा।

तब समस्त दैत्यों के राजा शुम्भ को अपनी ओर आते देख देवी ने त्रिशूल से उसकी छाती छेद कर उसे पृथ्वी पर गिरा दिया।

देवी के शूल की धार से घायल होने पर उसके प्राण-पखेरू उड़ गये और वह समुद्रों, द्वीपों तथा पर्वतों सहित समूची पृथ्वी को कँपाता हुआ भूमि पर गिर पड़ा।

तदनन्तर उस दुरात्मा के मारे जाने पर सम्पूर्ण जगत् प्रसन्न एवं पूर्ण स्वस्थ हो गया तथा आकाश स्वच्छ दिखायी देने लगा।

पहले जो उत्पातसूचक मेघ और उल्कापात होते थे, वे सब शान्त हो गये तथा उस दैत्य के मारे जाने पर नदियाँ भी ठीक मार्ग से बहने लगीं।

उस समय शुम्भ की मृत्यु के बाद सम्पूर्ण देवताओं का हृदय हर्ष से भर गया और गन्धर्वगण मधुर गीत गाने लगे।

दूसरे गन्धर्व बाजे बजाने लगे और अप्सराएँ नाचने लगीं। पवित्र वायु बहने लगी। सूर्य की प्रभा उत्तम हो गयी।

अग्निशाला की बुझी हुई आग अपने-आप प्रज्वलित हो उठी तथा सम्पूर्ण दिशाओं के भयंकर शब्द शान्त हो गये।

इस प्रकार श्रीमार्कण्डेय पुराण में सावर्णिक मन्वन्तर की कथा के अन्तर्गत देवी माहात्म्य में 'शुम्भ-वध' नामक दसवाँ अध्याय पूरा हुआ।

Durga Saptashati

|| 'Tenth Chapter' ||

Chapter 10:

The Slaying of Shumbha

|| **Dhyana (Meditation)** ||

I meditate in my heart upon the revered Kameshwari, the very form of Shiva-Shakti, who wears a crescent moon on her forehead. She is beautiful like refined gold. The Sun, Moon, and Fire are her three eyes, and she holds a bow, arrow, goad, noose, and trident in her enchanting hands.

The Rishi said: O King! Seeing his brother Nishumbha, who was dear as his own life, slain, and knowing the destruction of his entire army, Shumbha became furious and said:

'Wicked Durga! Do not show false pride under the arrogance of your strength. You are very conceited, but you fight by taking the support of the strength of other women.'

The Devi replied: O wicked one! I am alone. Who else is there in this world besides me? Behold, these are my own powers (Vibhutis), and they are now entering back into me.

Thereafter, all the Goddesses, led by Brahmani, merged into the body of Goddess Ambika. At that time, only Goddess Ambika remained.

The Devi said: I was present here in many forms through my power of divine sovereignty (Aishwarya Shakti). I have withdrawn all those forms. Now I stand alone in battle. You too, stand firm.

The Rishi said: Thereafter, a terrible battle broke out between the Devi and Shumbha, witnessed by all the gods and Asuras.

Due to the shower of arrows and the blows of sharp weapons and dreadful missiles, their combat seemed very frightening to all people.

The Daitya King Shumbha countered the hundreds of divine weapons that Goddess Ambika discharged at that time with neutralising missiles.

Similarly, the divine weapons that Shumbha discharged were destroyed by the Supreme Goddess playfully, merely by uttering a terrifying roar (Humkara) and other means.

Then, that Asura covered the Devi with hundreds of arrows. Seeing this, the Devi, filled with anger, cut his bow with her arrows.

When his bow was cut, the Daitya King took a Shakti (spear) in his hand, but the Devi also cut down the Shakti in his hand with her discus.

Subsequently, Shumbha, the lord of the Daityas, took a shield shining with a hundred moons and a sword in his hand and rushed at the Devi.

As he advanced, Chandika immediately cut down his shield and sword, which were bright like the rays of the sun, with sharp arrows released from her bow.

Then the horses and charioteer of that Daitya were killed, and his bow had been cut down earlier. Now, preparing to strike Ambika, he took a formidable club (Mudgara) in his hand.

Seeing him approach, the Devi also cut down his club with her sharp arrows, yet that Asura, brandishing his fist, rushed towards the Devi with great speed.

That Daitya King struck the Devi's chest with his fist, and then the Devi also struck his chest with a slap.

Struck by the Devi's slap, the Daitya King Shumbha fell to the ground, but then suddenly rose up and stood as before.

Then he leaped up and, taking the Devi with him, stood in the sky; then Chandika fought with Shumbha in the sky as well, without any support.

At that time, the Daitya and Chandika fought each other in the sky. Their battle at first astonished the Siddhas and Munis.

Then, after fighting with Shumbha for a long time, Ambika lifted him up, whirled him around, and hurled him down to the earth.

After falling down to the earth from being hurled, that evil-minded Daitya again rushed towards Chandika with great speed to slay her.

Then, seeing Shumbha, the king of all Daityas, coming towards her, the Devi pierced his chest with a trident and cast him to the ground.

Pierced by the sharp point of the Devi's spear, his life departed, and he fell upon the earth, shaking the entire globe, including the oceans, islands, and mountains.

Thereafter, when that wicked soul was slain, the entire world became joyful and perfectly healthy, and the sky appeared clear.

The portentous clouds and meteor showers that used to occur before all subsided, and the rivers began to flow in their proper courses after that Daitya was killed.

At that time, after Shumbha's death, the hearts of all the gods were filled with joy, and the Gandharvas began to sing sweet songs.

Other Gandharvas played musical instruments, and Apsaras began to dance. A pure breeze began to blow. The sun's radiance became excellent.

The extinguished fire of the sacrificial halls spontaneously ignited, and the dreadful sounds from all directions were silenced.

Thus, in the Shri Markandeya Purana, in the Devi Mahatmya, which is part of the narrative of the Savarnika Manvantara, the tenth chapter named 'The Slaying of Shumbha' is completed.

Numerology By Nehaa

Connect on WhatsApp for Consultation: 8802673153

Our Services

- Name Correction
- Lo Shu Grid reading
- Missing Number Remedies
- Business Name Correction
- Baby Name Correction
- Kundali Matching
- Lucky Mobile Number
- Lucky House Number
- Lucky Vehicle Number
- Home Vastu
- Office Vastu

Free Numerology Tools

- Numerology Name Calculator
- Lo Shu Grid Calculator
- Lucky Mobile Number Calculator
- Lucky Vehicle Number Calculator
- Numerology Kundali Matching Tool